नवंबर
2025

धर्म एवं अध्यात्म के तत्वज्ञान का वैज्ञानिक विश्लेषण

अखण्ड ज्योति

वर्ष 89

अंक - 11 । प्रति - ₹ 25 । ₹ 300 वार्षिक

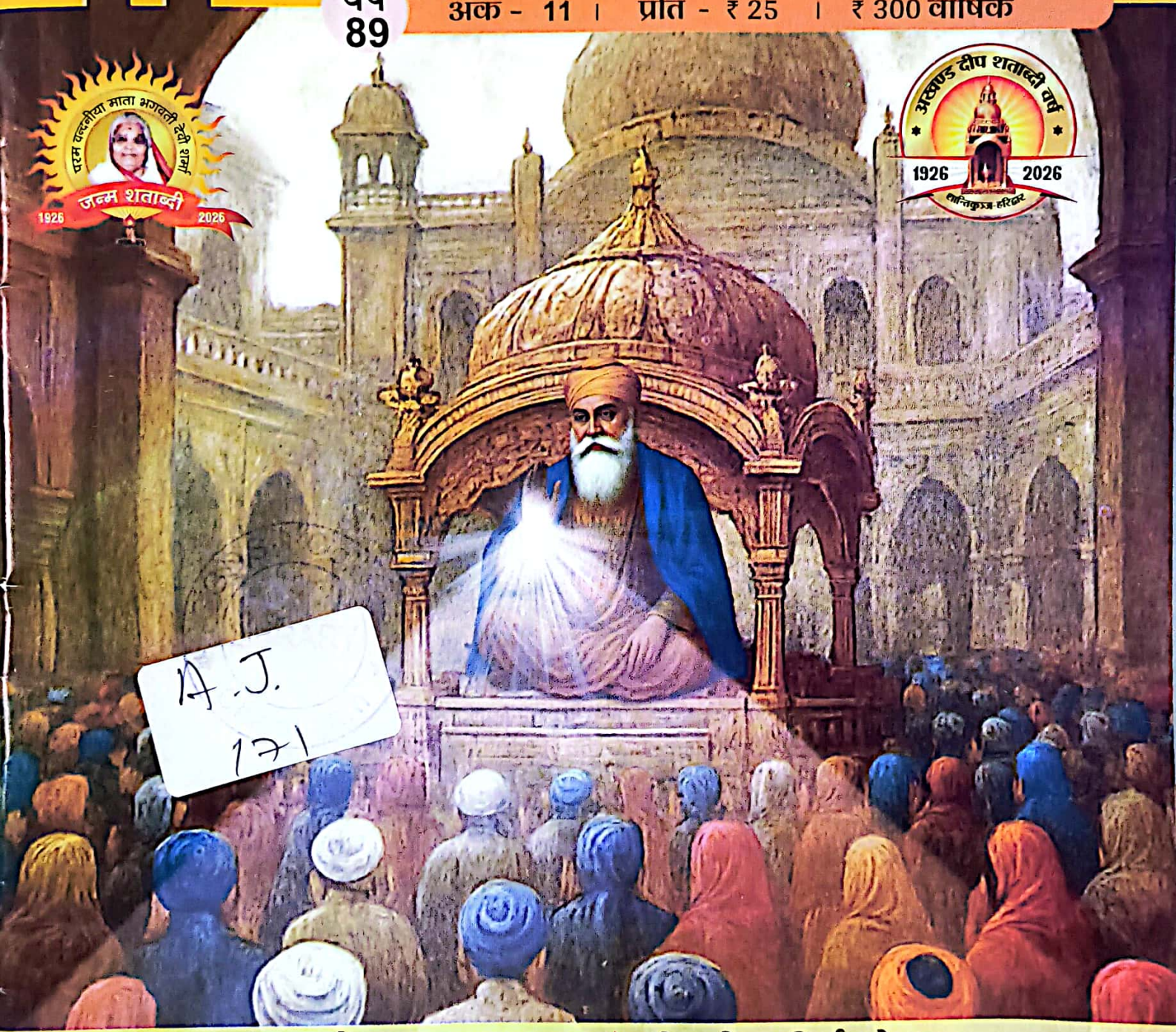

A.J.
171

17 ▸ आत्मज्ञान : मनुष्य के उत्थान का पथ
30 ▸ आत्मकल्याण का उत्तम मार्ग
42 ▸ जीवन के नवनिर्माण के क्षण
48 ▸ अविभक्त को विभक्त देखता है राजसी ज्ञान

CamScanner

विषय सूची

- आवरण—1 — 1
- आवरण—2 — 2
- शांतिकुंज — 3
- **विशिष्ट सामयिक चिंतन**
  धर्मो रक्षति रक्षितः — 5
- जीवन का प्रकाश पथ — 7
- कभी निष्फल नहीं जाती गायत्री-साधना — 9
- ईश्वरमिलन — 12
- सकाम भक्ति भी मूल्यवान है — 13
- ईश्वर से साझेदारी — 15
- आत्मज्ञान : मनुष्य के उत्थान का पथ — 17
- महान संत गोस्वामी तुलसीदास — 18
- **पर्व विशेष—गुरु नानकदेव जयंती**
  एक ओंकार सतनाम — 22
- आत्मदेव की साधना — 25
- स्वधर्म एवं युग-परिवर्तन — 28
- भगत सिंह : क्रांति की अमर पुकार — 29
- आत्मकल्याण का उत्तम मार्ग — 30
- बल की उपासना करें — 32
- ब्रह्मविद्या की महान परिणति — 33
- काल करे सो आज कर, आज करे सो अब — 35
- आत्मप्रज्ञा का जागरण — 38
- पहले स्वयं को बदलें — 40
- जीवन के नवनिर्माण के क्षण — 42
- **ब्रह्मवर्चस-देव संस्कृति शोध सार—199**
  बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार — 44
- **युगगीता—306**
  अविभक्त को विभक्त देखता है राजसी ज्ञान — 48
- **परमवंदनीया माताजी की अमृतवाणी**
  उपासना-साधना-आराधना (पूर्वार्द्ध) — 50
- **विश्वविद्यालय परिसर से—245**
  राष्ट्र-जागरण की नींव रखता
  विश्वविद्यालय — 56
- **साधना शताब्दी-विशिष्ट लेखमाला**
  उद्योग व्यापार का बदलता स्वरूप — 60
- **अपनों से अपनी बात**
  अपने आप को पहचानें — 63
- मानवता का कल्याण हो गया (कविता) — 66
- आवरण—3 — 67
- आवरण—4 — 68

आवरण पृष्ठ परिचय

"गुरु बिनु घटि न ज्ञानु न उद्धरै, गुरु बिनु समु न तरिआ।" (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 59)

अर्थात—गुरु के बिना न तो ज्ञान प्राप्त होता है, न ही जीवन का उद्धार होता है। गुरु ही वह नौका हैं, जिससे संसार-सागर पार किया जा सकता है।

नवंबर-दिसंबर, 2025 के पर्व-त्योहार

रविवार	02 नवंबर	देवप्रबोधिनी एकादशी/ तुलसी विवाह	सोमवार	01 दिसंबर	मोक्षदा एकादशी/ गीता जयंती
बुधवार	05 नवंबर	गुरु नानक जयंती/ पूर्णिमा/देव दीपावली	गुरुवार	04 दिसंबर	दत्तात्रेय जयंती/ पूर्णिमा
शुक्रवार	14 नवंबर	बाल दिवस	सोमवार	15 दिसंबर	सफला एकादशी
शनिवार	15 नवंबर	उत्पत्ति एकादशी	गुरुवार	25 दिसंबर	क्रिसमस
			बुधवार	31 दिसंबर	पुत्रदा एकादशी

★ **यह पत्रिका आप स्वयं पढ़ें तथा औरों को पढ़ाएँ। कुछ समय के बाद किसी अन्य पात्र को दे दें, ताकि ज्ञान का आलोक जन-जन तक फैलता रहे। —संपादक**

CamScanner